डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

ग़ज़ल

जब भी बिजली कट जाती है
कितनी मुश्किल फिर आती है

इनवर्टर भी बुझ जाता है
कितना वो भी चल पाता है

जब भी आंधी पानी आए
फिर बिजली फौरन कट जाए

फिर तो हम सब डर जाते हैं
बिन कूलर कब सो पाते हैं

बिन बिजली ना पानी आए
और मिक्सर भी चल न पाए

देखो हर सू अंधियारा है
काम बचा ही सब सारा है

इस सबसे आज़ादी पायें
सोलर ऊर्जा चलो लगायें

मुफ़लिसों की कहाँ बाज़ार से गाड़ी निकली
जब सड़क पर कभी रफ्तार से गाड़ी निकली

झोपड़ी आ गई रस्ते में हमारी जब से
फिर उसी घर की ही दीवार से गाड़ी निकली

आज कुछ मजमे ने कुछ बात न मानी उनकी
तेज रफ्तार में इंकार से गाड़ी निकली

वो अपाहिज था भटकता रहा रिक्शे के लिए
थे बड़े लोग तो सरकार से गाड़ी निकली

लॉटरी सब के मुकद्दर में कहाँ मिलती है
लोग कुछ कहते हैं अखबार से गाड़ी निकली

दूर तक दिखता गया शीशे में झिलमिल कोई
हाँ मगर शोर से इंकार से गाड़ी निकली